



प्राणिं कत्रकं शमकं नृणां न॥ क॥
यत्नं लवसि पिथिवीं गह्वरे
यत्नं दन्तं नृणां न॥ क॥
यत्नं गगनं कद्रुतं नीलं कद्रुतं
यत्नं पन्नं गकं नृणां

यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां

षडमूया रत्नता ॥ वायुचलमयवर्ति
ननलसिलमात्रा ॥ ॐ ॥ वक्रमह
म्वजनात्रायनवृत्तः यावयी बहुव
लने. बहुमात्रमदनी ॥ ॐ ॥ ० ॥
ह्याग ॥ महुलसमयवक्रमहुलसय

रेफुः सादगुरुगचक्रयापियात्र
नगुकलूषणीसत्रयागिनी ॥ श्रीयाव
कलादवीमात्रणी ॥ ॐ ॥ अकिनी
त्रामाखलुत्रात्रवृषीणी. चात्रिमात्रयः
उचापित्रयन ॥ ॐ ॥ कायवाकचि

न मिहि सुवनः दानप मिया नु सु सुव
 मात्रु ॥ या गया मिही मत्री या . ह मत्र
 स सावः सु सु सा नती हु नू बा ॥ ५ ॥
 ॥ ० ॥

वा न . क मु नी . क मु नी .
 ध नि ध प रु नी ॥
 ना डा उ ख सि ध नि . वा न
 न प के स . प स के मु .
 प र्य नु . रु न के क म .
 यी र व नु . क मु नि
 सि न ॥ ध नि रु स धि रु नी ॥
 पा स १० ॥ व न न १०
 दि कि रु १२ ॥ रु प न
 डा स प न ॥ रु इ यान
 पा न ३० ॥ ना डा म रु न
 व य का य न ॥ आ स न
 र व दि ॥ न व न व न ॥
 ना डा . वा न ॥ क . उ नि . ६

रवलिंदा लोका
 रयदाकि मानको
 रकं प्रमला मानको
 रधनि विगागाला
 रचक सिन्धुले जयय
 रंसे जाल मालको
 यन ॥ कोया ॥ दुर्लभा ॥
 याले धाले मरवयय जेहि
 कोय मल्लिक
 जालेनि
 मलायन
 दासक म
 ठुनिद मयने जय

रवलिंदा लोका मला मययान्यया वि
 धानयगिशवा ॥ ० ॥ यादूद्वन निमि
 नगयज्ञाशला साधलिशको नमनयान
 माला ॥ ० ॥ निमिन्नयज्ञाशला ॥ यादूद्व
 क नमयाम् नखमालम् दवाहान यकुं
 ग्रीन विथलैरव कायकलकय यज्ञहास्य

र
 व
 ल
 ि
 द
 ा
 ल
 ो
 क
 ा

६३ काय ॥ मनु लोहा वक्र नादि अस्त्र कुल
माहा नाग मधिय नि ॥ ०० रुद्रा म्ना दिय ॥ वत्सा
य नार्थ ॥ इवें इवें स्वाहा ॥ धन लख रुया व ॥ म्य व
व ॥ ख फाय म म्य व ॥ हिमाल को रुय ॥ लख
रुद्र वया व ॥ यल ॥ ०० रुद्र म्ना दिय ॥ मा हा
म्य र्थ ॥ सर्व नाग ति ॥ रुद्रा म्ना दिय व र्ग पय २

इवें इवें स्वाहा ॥ १२ धन दा व ॥ लख रुद्र काय रु
ला ॥ नाग म लु ल या य ॥ नाग वा ला ष र्ग ॥ नाग
वृ य ॥ रुद्र म्ना दिय ॥ नाग ल यें धन धन ॥ च रु ल
दि ग ॥ नाग का द था य न ॥ अ रु दि ग वा य ॥ नाग
थ रु या य मा त्रा ॥ ज ल रुद्र ॥ रुद्र म्ना दिय वा य ॥
रुद्रा हा ल रुद्रा ॥ थ व थ व दि ग म् ॥ दि ग रुद्र म्ना

यन नागधमालको ह्यहना ॥ ॥ धन अः
आदियाय सुकृपा नास्त्याय हला सुसुमनु
न गिसमाधिराया नाधून दाडा कुंठ थाय
नाया दंग का दाडा ॥ धन सुमिख धन कुंठ था
धन धन का ना लीष वृत्र के वा म्या या य हना ॥
स्वस्ति वा धन रा रा व वृत्र न दया इ अरु कुल मा

हागै नो धियनय सर्वतथागत सत्यन भक्ति
विगत न नृपमत्यादाय वृद्धा म्वा दिय अ
मक नार्थ वसाय नार्थ सुसुवस्व ॥ क्रिया यामः
लज्जा नार्थ हना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नलन १८

नलन १८ या यथा म न म के

उत्तिमि-

सा न कया इ

वलेगमसि

इ थणि न न न

इ विलसि

इ या ग व वि

मिनाषसि

माला कुश

थणि सि या हल

मिउपव १०२

रायवमल

आसाग

गका गेजा

ययका

खानदा

अनवल

रायदा रुने

रदिनयति य रुहाय ॥ इइरु २ धान इल्लदन
समरवन मनिकु मालस गंरवमालग थनि
समरवन ॥ ॥ थव थव थथ थयस काय रुग ॥
॥ ॥ थनलिया कवलिविय काकिनवलि
ग रवालवलि यानयिन गयकु यनाय स्वाय
रुग ॥ इइ स्वधि दि ग काय नन साधन

थनिधनदावयालनरुत्रा ॥ ॐ मिमाहावल
साधनगुरु ॥ ॐ ॥

वृषाष्टम

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

महायज्ञनाम ।

गोवर्मान् पर्वत ।

धर्मिणं पानन वापिय हूपां इ वास्या च

धर्मिणं पानन वापिय हूपां इ वास्या च
पां इ वास्या च हूपां ॥

आदिना नामा ॥ ^{वृद्ध}मिति

अ. कठवान

रुनामा ॥ वं मलि

अ. कठवा । व. रुनालि

मधुयर्वन. तक्रक. नाग.

सधिस मूड.

यूक्त मय ॥ यष्विस

दिमिस. रुधि. लीख. खन.

वा. गमधि सिय ॥ धवसिषान

वापिय इ. वागायि. रुठिसिक्का

रुय ॥ वसिषिषान. मान ॥

म. रुनालि

संवण मय

कि मूड

वागु किनाग

सू मयर्वन

धर्मिणं पाननं उनायिय माना ॥ पर्वदकं रुक.
वापिय. पूत मय ॥

मं राजा ॥ श्री मन्त्रि

वडकठवाल

उ. हं. अलि.

ॐ. ष. समु. ड

ककठ. नाग

कयेनास. यर्चन

धपनिपात्रन

वापियननो. मड.

वा. रुक्. स्यावू

यज्ञहायमान

श्व. राजा. नैमन्त्रि

उ. कठवाल. श्री. र. अलि.

किल. समु. ड. कलिकनाग

गीयवत.

धपनिपात्रन. वाधि

यमड. वामस्या. व. वना

पियमान. यज्ञहायमान

वलिपियमान ॥

॥

व. स्यानि. राजा. अलि. मन्त्रि. उ. क. का. रु.

वा. व. हं. अलि. के. सास. यर्चन. ॐ. ष. समु. ड.

ककठ. कनाग ॥ धपनिपात्रन. वापिय.

धान. उ. ना. दं. स्यावू. व. खा. वं. स्यावू. यज्ञ

हायमान ॥

॥

हं सिद्धि नू नू हा कोमि ना मो हा सि गी क
 ला श्री का ग्य **शु** दि. दि गू ना क. कि व व
 ना. श्री रु ल सि दि. श्री पा दो का सु न
 न. महा म न नि. कू द य २ स्वा हा ॥
 महा का लि का ग्य व य वि कू ॥ श्री नि
 ल क ७ महा द न व व न. श्री य न दू द
 कू ना ग ठ ठ ठ ह वि य ड व रु पा नि डू
 रु ठ ३ स्वा हा ॥ द व सा नि द्र या य ॥

१ उं न मः च वि व ज क ध ह ल वा य न
 म ०। नि ष १ व च २ रु न २ अ म न कू कू
 दू ठ व रु वि द्रा न णी लू लू २ कू द न ड
 श का म्य व रु रु कू ज ग मा न म्य. श्री या जी
 धि ना जी. श्री २ श्री वा न रु रु वि कू म सा हा
 द व स व ति खा स म य अ ल मू न किया
 का ल न सं सा ल उ ध ल ना थं अ ल य ना य
 आ न र नि मि ति थं दि न गू र्णा य अ च न म

मं क वा दा को वा व न का
 म न क

रक्षितं ननु वा न या न्न गामं म कृत्वा निःशान् न भो वा ॥

रक्षि इमं कृत्वा निःशान् न भो वा ॥

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

नय पथ संख भो या न

पद्याभेद

गानो

युगं विदुः
भागदंष्ट्रकास्यकाहावने
धमन्डास्यी. सुखद्वय
हवावाहा. हिमाहादव
इ. इ. ए. स्. ॥ यानेनादू
यद्वनी विवास्वतायाग
वालिपान ३. कर्वाही
समय धमन्ता. भा. न. की.
पिनवाह्यी. ध्वनीग
मकडानेधमद. कलि
वनपि रुका. मरगा
मनीया. सह कडा. ने. ॥

मधुधानि. गोक. धन. सा. न. सु
य. ध. न. द. न. मा. न. ॥ ध. न. क.
क. नि. र. वा. न. ॥ यो. ने. मा. न. ॥ या
ने. ना. क. नि. न. वि. य. ड. ॥

रणीयासु स मयत् ० लम्बाषाटकषू. वृद्धवालः
 धूकू. मत्क वाहास. कोरू कदिन इना ॥ या
 गाभी २ वन्न वा दो मा हां ग या वेल स. को हा उा
 नयिं श्री वजा चाई दा ठि ह म् वा हा त स ची न झ
 नी वजा चाई ल क कल. झ नू वा हा के ची न झ
 धनि झ डी ना बा म ग न डा. चो ना. थ्य हा डी
 गु ही ना. न किं थ्य मा वा न ग म न ३

स्यं नी. क्य ह लं नी द्वा ग म न चानं दितं ग म क त वा
 म ग म क । रा ना : य डा. म गं डु ह या व. सि पा ल
 नि झ सें श न डा स न. वे ता नी. उ घा नी य घा
 नी. रा दा. वि वा हा. ग व वे न स. म्वा न ध के.
 द स क ल वा सी वि व ह रा. थ्य वेल स. तंग
 वा हा ल स. च क म्ब नी. दा ह. कि ना व ना ह.

१ संख्यत १२ श्री श्री दृष्ट प्रयाग यथा यच्च वा
लथक द्रु मं क वा हा न स श्री वजा वा यः
दा ॥ ४ ॥ श्री को हा व दा दिन शत्रा ॥ को हा डा ना
न वा ग म क थ हा डा यान वा ग म क
१ संख्यत ३१ श्री श्री दृष्ट प्रयाग यथा यच्च वा
लथक द्रु मं क वा हा न स श्री वजा वा यः तव धिः

को हा व ना दिन शत्रा को हा व ना दिन स वा म मः

दानय किञ्च न न स का सिय ग्व सु ऊ जन ह निया
प्र वृ ज म नि न न द ना प्राय न सा हा द व त्रा डा धि
ना डा श्री श्रि यि वा न इ ल्ध विस विक म स हा द व स
वलि वा स म य ऊ न स ने का व न सं सा व उ धा व काः

वन नवनगवलनके डलयतायकावननिः
मिस्तथं दिनशुशायिअर्थनमहामंकवाहजसः
लंबहानडानयात कालंवासांतयाइगागाभुरु
रसवतलहतआयाठकुकुयधूमि। गंरडात्र
थुकुके श्रीवडावाइतवधिशकोदाव
नादिनइनीवागनका॥ कास्ययग्वस्तजश

मानह्यनिवात्रशोदामनि नत्रनादायन
सादादव महाजाडा धिवाजठीउराईनाडि
नुविलविकल्मसादादवस्य वलिखासम
मराजालभूचक्रियाकालने संसाउधालका
लने नवनगवलनके डलयतायकावन
ननिमिस्तथं देवस्थराइनायसंकुय

यामिसं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ २ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ३ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ४ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १० ॥

५३

स्नागवसि

स्नागवसि सरथय॥

स म व व

वायुमिय स्वाहा ॥ अग्निस् ॥ ॐ आः ॥ तक्र काय स्वा
हा ॥ दक्षिण ॥ ॐ आः ॥ कर्कट काय स्वाहा ॥ नेमय
स् ॥ ॐ आः ॥ यद्राय स्वाहा ॥ वक्रिमस् ॥ ॐ आः ॥ म
हायद्राय स्वाहा ॥ वायव्यस् ॥ ॐ आः ॥ भीखयात्रा
य स्वाहा ॥ उक्त्रस् ॥ ॐ आः ॥ कलिकाय स्वाहा ॥
ॐ नमस् ॥ ॐ आः ॥ दूं य दूं नें दूं स्वाहा ॥ म धा

मुनि ३

स् ॥ ॐ आः ॥ दूं धूय दूं नें दूं स्वाहा ॥ ॐ आः ॥ दूं गं
धूय दूं नें दूं स्वाहा ॥ यं याय दूत्र यूजा ॥ त्रास्या दूं
अ वाजनं ॥ जत्रा मिय नि नागं च - स्वस्व दिसि
वावस्तिन सत्वा अयमदा निती - वत्र अयनमा
मुने ॥ ॥ धूमिदश विषय ॥ धन - अयुदिगर्भ
विषय काययाय - त्रिदिविषय - रुग्ण विषय ॥ यच्च

याग॥ उं वज्रवल्लभं नंदं ॥ रुयुनिविय ॥ धलः
कलिः साखलः पूवाकि इहसः होसी वलिस
गम्यः प्रिय ॥ दालसा ॥ उं वज्रवल्लभं नंदं वादियव
षायनं नंदं ॥ १०८ ॥ पूर्वसा ॥ पूर्वअनः
ननागवाज्ञानकिराकसमदृसंकमलविद्रुम
ज्ञानं विराया ॥ आकषनः पायादिः यस्यानासः

यं यायदात्रयज्ञा ॥ प्रयाः गुणि ॥ ॥ दक्षिणः
यागः यज्ञा ॥ उं अनंताय नंदं वलिसगया ॥ रु
किविपः यतः वलिविय ॥ उं श्रीअनन्तावस्थां यं
यं नंदं द्वियदं नंदं स्वाहा ॥ ॥ दक्षिणपद्मना
गधियः कृद्दृसंकासं वलं वाकिगनिषं विः
राया ॥ आकषना ॥ पायादिः यस्यानासः लास्या

यं लुवादन मुनि ॥ ॥ पश्चिमया न ॥ जाय स्वा
नगय ॥ ॐ यं यत्राय हूं नंदं स्वादा ॥ ह कि विय ॥
कस्मि वसि विय ॥ ॐ यं यत्रा वष्यायय हूं नंदं स्वा
दा ॥ ॐ स्वादि य हूं नंदं स्वादा ॥ ॥ ॐ पश्चिम न
ककनाग नीत्र कनया व क कि न सित्र विहा वा ॥
आकषन यायादि धूय यष्या न्या ग यं याप्य ॥

दात्र पूजा ॥ मुनि ॥ ॥ जाय ॥ ॐ नंदं ककायः
हूं नंदं स्वादा ॥ ह कि मित्रा वसि ॥ ॐ नंदं ककाय व
ष्यायं ॐ यं या दि य हूं नंदं स्वादा ॥ ० ॥ ॐ नंदं
वा मुनि नाग नाजा नीर्त नीला न्यत्र कि न सिष वि
हा वा ॥ ॐ या धू यष्या न्या ग यं या यदात्र य
जा नास्या यं लुवादन मुनि ॥ जाय ॥ ॐ वां

वायुकि नंदं नंदं स्वाहा ॥ रुकि सावल ॥ वलि ॥
ॐ वां वायुकि व व्या यय स स्वा द्वि पदं नंदं स्वाहा
॥ ० ॥ ॐ ॐ ॐ नमस्तु य प्र नाग धियनि क
दक वरु निगलला कित सिष विराय ॥ आ क ॥
पाशा धूप यष यं वा नास्या मुनि ॥ ॥
जाय ॥ ॐ सं ख पा जाय दं नंदं स्वाहा ॥ रुकि सा

यहाम वलि ॥ ॐ सं ख पा जाय व र्वा यं यं ॐ वा द्वि
पदं नंदं स्वाहा ॥ ० ॥ ॐ ने स ग्य क क ठ क
नाग जाजा धव वरु नित्र या कित सिष वि
राय ॥ आ क पाशा धूप यन यष यं वा रु
नि ॥ ॐ ॐ क क ठ का व र्वा यय य ॐ वा द्वि पदं नंदं
स्वाहा ॥ ० ॥ ॐ वाय व क लि क ना म जाजा

नं. यिरुत्रक विविनवर्षु. अद्वचवृकिगकं ०
 विरावा ॥ आक. याया. धूप. यथा. यथा. गुणि.
 जाय ॥ ॐ कंकरीकाय हं नं हं स्वाहा ॥ रुगुनि. कवा
 वलि ॥ ॐ कंकरीकाय हं नं हं स्वाहा ॥ रुगुनि. कवा
 हं स्वाहा ॥ यथायदा यथा ॥ मुनि ॥ जगद्विपतिना
 गात्र. स्वस्वदिव्यकिगसत्वाथाय. वलनाय नमः

मुनि ॥ ॐ ॥ ॐ निनागवलि समाक ४ ॥ ॐ ॥
 ॐ नमः ४ श्रीवज्रक्षाय शामध्वस. वलनाय कुरु. कुरु
 क्षयाय. नागकन्या. क्षदिन. विज. हल. रुद्र
 कि. धातु. धूप. कुरुहा ॥ नागय. ग्वउते
 ॥ १ ॥ यवस. अनन नाग. नीलवर्षु ॥ धा
 तुल. विज. नील. धूप. गुगुली ॥ १ ॥ दक्षि

धम यज्ञनाग मुकुवर्धु धातु लिनी ॥ विज
धनाग धय गीत ॥ ३ ॥ यश्चिमस गङ्गक
ना ग नकुवर्धु धातु मनिक विज सिङ्गल
धय कमुत्रीयन ॥ ४ ॥ उरुत्रस वाङ्गुकि
नाग यिरुवर्धु धातु डादा वीज मयत्र ध
य कय्यत्री ॥ ५ ॥ ॐ नाना महायज्ञनाग

यिरुवर्धु विज मकि धातु कंठसंद धय
गौरव ॥ ६ ॥ आर्यस गौरवयात्रनाग यि
गवर्धु विज कर्कठन धातु दाल धयथ
नतकि ॥ ७ ॥ नेमत्यस कर्कठक नाग
मुकुवर्धु विज वेड्य धातु कंठ धय ऊ
मुत्रीसि ॥ ८ ॥ वायव्यस कलिकनाग यीरु

वर्धू स्याकवर्धू विज नाउर्क धाउ ३
 वयगधर्वन ॥ ३३ धल साखल ग
 लदा कलि पाधाल धन नागय गुग्ग
 लसंधन धन शवना ॥ गुग्गमल नागद
 गुली कलसयज्ञा नागमल यज्ञा वलिः
 विय दगुलिवलिविय ॥ अकयज्ञा यज्ञस्य

खानकतन गुग्गयज्ञा दक्षिण कुमायन
 आसिवाद सग्वनतन केभारिकक दाकि
 विय ॥ समय रंवा ३३ पावनयाय ॥ गद
 वक ॥

आशादास कोष
 2624 I

नयुरुज्जिञ्जगविज्जु ०० गहिज्जगवप
हामामि॥ ५५ ॥ संशोजनया॥ ०
हृदि श्वागरेत्रवि॥ हृदसि त्रमकुगकि त्रत्तमंन
रासिताः चनरुगममहियवज्जसगयल
मैः युद्रवमदं॥ गमरुहनिवहपिथिगंथूर्गे

तः दहधर॥ ५५ ॥ गामिषुसुलन
वाविषुसुमधवः दहधर॥ ५५ ॥
वाग॥ विषुवनदासिगमूत्रनिषूनवा
यनि वृत्तवणि॥ नावयिवज्जसुत्वययन
स्वत्रविनवणि॥ यस्मीसंक्षममिषदय

संस्तव्यं सः सा सवधिं ॥ ध्रु ॥ वक्ष इदं
कृषविसहनूवायनिः सखवधि ॥ ३२ ॥
२ गगमा लगी ॥ ठाल इक्षु मा न ॥ वृ ली
गम विव लु के ला ति २ सि ख म पि ड् न
की ग पि दाय न ॥ हं ३३ द्रिया २ कं रु न क

जं क गालि २ रु क न स रु ग न इ ति
स म या न रु गु डा गा म्ब वि द यी २ व
गु लि व गु ति व म ख रु या न ॥ ३४ ॥
वन ना व्या नू व स रु २ रि व रूं ॥ ३५ ॥
॥ रि व कं का ल रु णा व ति ख रु २